हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की कार्यवाही सोमवार, दिनांक 26 अगस्त,2019 को माननीय अध्यक्ष, डॉ0 राजीव बिन्दल की अध्यक्षता में कौंसिल चैम्बर, हिमाचल प्रदेश विधान सभा शिमला-171004 में 2.00 बजे (अपराह्न) आरम्भ हुई।

शोकोद्गार

अध्यक्षः पिछले वर्किंग डे और आज के बीच में माननीय अरुण जेटली जी का देहावसान हुआ है। इस पर माननीय मुख्य मंत्री जी अपना शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

मुख्य मंत्रीः माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत छोटे से अंतराल में हमारे दल के ही नहीं, देश के वरिष्ठ नेता, श्री अरुण जेटली जी हमारे बीच में नहीं रहे। श्री अरुण जेटली जी का देहान्त 24 अगस्त, 2019 को 66 वर्ष की आयु में हुआ। वे लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे। इस अवधि के बीच वे एक बार ठीक भी हो गये थे और ऑपरेशन होने के बाद उन्होंने कामकाज़ करना भी शुरू कर दिया था। लेकिन नियति को जो मंजूर होता है, होता वही है। वे पुनः अस्वस्थ हुए और उनको फिर से ऑल इण्डिया इंस्टीच्यूट ऑफ मैडिकल साईसिंज़, दिल्ली में एडमिट किया गया। वहां उनकी स्थिति लगातार बिगड़ती गई और अंततोगत्वा 24 अगस्त, 2019 को उनका देहांत हुआ। श्री अरुण जेटली जी की छवि पूरे देश में एक कद्दावर नेता की थी। मैं समझता हूं कि उनकी मृत्यु से हमारी पार्टी के लिए तो नुकसान है ही लेकिन यह क्षति पूरे राष्ट्र की है। क्योंकि श्री अरुण जेटली जी को एक प्रख़र और तेज़स्वी वक्ता के नाते पूरा राष्ट्र जानता है। श्री अरुण जेटली जी भारत सरकार में 13 अक्तूबर, 1999 से 30 सितम्बर, 2000 तक सूचना एवं प्रसारण मंत्री, 29 जुलाई, 2003 से 22 मई, 2004 तक कानून एवं न्याय मंत्री, 3 जून, 2009 से 2014 तक राज्य सभा में विपक्ष के नेता और 26 मई, 2014 से 30 मई 2019 तक केन्द्रीय वित्त मंत्री रहे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने बतौर वित्त मंत्री बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिये। चाहे नोटबंदी हो या देशभर में ''वन नेशन वन टैक्स'' के अंतर्गत जी.एस.टी. को लागू करने का निर्णय हो, यह सब निर्णय उन्होंने लिए। उन्होंने ऐसे ऐतिहासिक और बड़े निर्णय पूरे दायित्व के साथ लिए। उनके पास 9 नवम्बर, 2014 से 5 जुलाई, 2014 तक सूचना एवं प्रसारण मंत्री और 13 मार्च, 2017 से 3 सितम्बर, 2017 तक रक्षा मंत्री का कार्यभार भी रहा। हिमाचल के साथ श्री अरुण जेटली जी का बहुत निकट का संबंध था। प्रदेश से संबंधिति

जब भी कोई मामला किसी कोर्ट या हाईकोर्ट में होता था, जिसमें हमको लगता था कि एक अच्छे वकील की आवश्यकता है तो हमने यहां पर भी उनको पैरवी करते हुए देखा है। जब वे हिमाचल आते थे तो वे मालरोड पर घूमते थे और लोगों से बातचीत करते थे।

26-08-2019/1405/डी.सी.-एन.जी./1

खासकर हमारे जो वकील लोग थे उनके साथ उनका व्यक्तिगत नाता था। उन लोगों के साथ चाय पर बैठना और चर्चा करना उनकी आदत में शुमार था। सत्ता पक्ष में क्या चल रहा है, विपक्ष में क्या चल रहा है, इन सब विषयों पर जानकारी ग्रहण करना उनका स्वभाव था। हिमाचल प्रदेश के साथ उनकी बहुत सारी यादें जुड़ी हुई हैं। जब मुझे हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री बनने का दायित्व प्राप्त हुआ तो एक कर्टसी कॉल के तहत हम उनसे मिलने गए। हमनें उनके साथ बैठक करके हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में बहुत सारे विषयों पर चर्चा की। हमारी औपचारिक बातचीत पूरी होने के बाद उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर हमें रूकने को कहा और 15-20 मिनट अलग से चर्चा करते हुए बताया कि हिमाचल प्रदेश को कैसे चलाना चाहिए और कैसे काम करना चाहिए। हिमाचल प्रदेश की वित्तीय स्थिति पर बात करते हुए उन्होंने हमें बताया कि हमें सारे विषयों पर फोकस करते हुए कैसे काम करना चाहिए। जब भी हम उनसे मिलकर हिमाचल प्रदेश के हित के लिए कोई विषय रखते थे तो उनका हमेशा से यही स्वाभाव रहता था कि बैठक के बाद वे अलग से हमसे बात करते थे और सारे विषयों पर हमें अच्छे से समझाते थे। पूर्व में उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा और स्वस्थ होने के बाद कार्यलय में पुनः काम पर लौटे। डाक्टर ने उन्हें कहा था कि आपकी किडनी का ट्रांसप्लांट हुआ है इसलिए लोगों के सम्पर्क से थोड़ी दूरी बनाएं रखें। उन्होंने सहज रूप से अपनी बात करते हुए कहा कि कोई कहे या न कहे परन्तु जहां मेरी आवश्यकता है वहां मुझे ही बात कहनी पड़ेगी। उनके स्वस्थ होने के बाद जब हम उनसे मिले तो उन्होंने कहा कि हम सब सार्वजनिक जीवन में रहने वाले लोग हैं और हम अपने स्वास्थ्य सम्बन्धी मुश्किलों को जाहिर नहीं करते और आमतौर पर हम इन बातों को छुपाते हैं। मैं मानता हूं कि ऐसी बातों को छिपाने से कोई लाभ नहीं होता परन्तु हम उनकी बात को

नहीं समझ पा रहे थे कि वह क्या बोलना चाह रहे हैं? फिर उन्होंने दो नेताओं का जिक्र किया कर्नाटक से हमारी पार्टी के राष्ट्रीय नेता माननीय श्री अनंत कुमार जी जिन्हें कैंसर हुआ था और स्टेज-चार पर चला गया था। श्री अनंत कुमार जी ने अपनी बीमारी को लेकर कहीं भी सार्वजनिक रूप से नहीं कहा, केवल 2-3 नेताओं के साथ ही इस बात को सांझा किया। उन्होंने किसी से भी अपनी बीमारी के बारे में चर्चा नहीं की। श्री जेटली जी ने कहा कि हमारे छिपाने से क्या होगा क्योंकि हम तो लोगों को केवल दो नज़रों से ही देखते हैं परन्तु दुनिया हमें लाखों नज़रों से देखती है। वह अपने आप अनुभव कर जाती है कि कुछ गड़बड़ है। इसी प्रकार उन्होंने जो हमारे गोवा के मुख्य मंत्री थे और केन्द्र सरकार में रक्षा मंत्री भी रहे, माननीय श्री मनोहर पारिकर जी का भी जिक्र किया। उन्होंने अपनी बात करते हुए कहा कि मेरी परिस्थिति भी ऐसी ही है, किडनी का ऑप्रेशन करवा कर और नई किडनी लगवा कर आया हूं परन्तु ऐसी परिस्थिति में भी मुझे ही कहना पड़ेगा और यही मेरी परेशानी है। हम सार्वजनिक जीवन के लोग हैं और इन सब बातों को स्वीकार करने में थोड़ा संकोच करते हैं परन्तु संकोच की कोई वजह नहीं होनी चाहिए। चुनाव से पहले राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में हमारा उनसे मिलना हुआ और हम उनके साथ मंच साझा कर रहे थे। बैठक में उनका भाषण हुआ और उन्होंने केवल पांच मिनट में अपना संदेश देश के लिए दिया। यह उनकी प्रभावी प्रस्तुती का नमूना था कि किस प्रकार अपनी बात को प्रभावी ढंग से कहना है। जब भी पार्टी को लगता था कि बहुत ही कठिन मसला है और इसके लिए मीडिया के सामने हमारी प्रस्तुती अच्छी होनी चाहिए तो केवल श्री अरूण जेटली जी का नाम ही सामने आता था। इसके अलावा जब भी पार्टी को लगता था कि किसी मसले को माननीय उच्च न्यायालय या सर्वोच न्यायालय में अच्छे ढंग से रखना होता था तो केवल श्री अरूण जेटली जी का नाम ही सामने आता था।

26/08/2019/1410/RG/HK/1

जब भी बतौर मंत्री लोक सभा या राज्य सभा में किसी जटिल या कठिन विषय पर अपनी बात को ठीक प्रकार से राष्ट्र के समक्ष रखने का मौका आता था तब भी श्री अरुण जेटली जी का नाम आगे आता था क्योंकि वे बात ही इस प्रकार से करते थे जिसमें तर्क होता था।

वे चाहे हिन्दी या अंग्रेजी में बोलें लेकिन उसके बावजूद जब भी बोलते थे, बहुत प्रभावी ढंग से बोलते थे और उसमें से कुछ भी काटने या सुधारने की कोई गुंजाईश नहीं रहती थी। इसलिए मीडिया के लोगों के साथ भी उनका बहुत घनिष्ठ संबंध रहा है। क्योंकि उनके पास शब्दों का चयन उस प्रकार से होता था, चाहे वह मीडिया के समक्ष हिन्दी या अंग्रेजी में बोलें, उसमें बाद में किसी प्रकार के क्लेरीफिकेशन की कोई गुंजाईश नहीं रहती थी। ऐसी बहुत सारी चीजें श्री अरुण जेटली के नेतृत्व में इस राष्ट्र को मिली हैं।

अध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश में जहां औद्योगिक पैकेज की बात है, उसमें भी उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही। माननीय पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल जी को इस बात के लिए तैयार करना और हिमाचल प्रदेश के लिए जोरदार ढंग से पैरवी करना, जिस कारण से हिमाचल जैसे छोटे से कठिन प्रदेश में भौगोलिक दृष्टि से यहां इण्डस्ट्रीयल सेक्टर में जो निवेश आने की गुंजाईश बनी, उसमें उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही।

अध्यक्ष महोदय, मैं श्री अरुण जेटली जी के योगदान की इस माननीय सदन में भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं और उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए यह माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है। उनके परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की ईश्वर शक्ति दें, मैं इसके लिए भी प्रार्थना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे यहां इस सदन में एक व्यवस्था रही है, उसके अनुसार आमतौर पर शोकोद्गार, माननीय सदन के कोई सदस्य या पूर्व सदस्य के सन्दर्भ में होता है, लेकिन हमने विशेष तौर से आपसे आग्रह किया क्योंकि श्री अरुण जेटली जी न किसी दल तक सीमित थे और मैं समझता हूं कि वे न केवल किसी प्रदेश के नेता थे, बल्कि वे हमारे देश के एक नेता थे अतः उनके सम्मान में सदन की आज की कार्यवाही स्थगित कर दी जाए। आपने मुझे आज जो यहां शोकोद्गार प्रस्तुत करने का अवसर दिया, मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं और मैं चाहूंगा कि हमारे इस शोकोद्गार का प्रस्ताव उनके परिवार तक भी पहुंचे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब माननीय विपक्ष के नेता श्री मुकेश अग्निहोत्री जी शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

श्री मुकेश अग्निहोत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने श्री अरुण जेटली के निधन पर जो शोक प्रस्ताव इस सदन में रखा है, मैं भी उसमें अपने दल को शामिल करता हूं और श्री अरुण जेटली जी, जो कि पिछली केन्द्रीय सरकार में वित्त मंत्री थे और उससे पहले राज्य सभा में बतौर नेता, विपक्ष भी उन्होंने कार्य किया, वे आज हमारे बीच में नहीं रहे। वे पिछले कुछ अर्से से बीमार चल रहे थे, जिसके कारण उन्होंने मौजूदा केन्द्र सरकार में कोई भी पद ग्रहण नहीं किया। दिनांक 9 अगस्त से वे एम्स में भर्ती थे और 24 अगस्त को बीमारी से जंग लड़ने के बाद वे इस संसार से चले गए।

अध्यक्ष महोदय, उन्होंने एक छात्र राजनीति से अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया और एक अच्छे वकील के तौर पर उन्होंने अपने को स्थापित किया। वे एक बेहतरीन वक्ता थे। मुझे उनसे कई द़फ़ा मिलने का मौका मिला। एक तो बतौर पत्रकार उनसे मिलने का मौका मिला जब वे पार्टी के प्रवक्ता के तौर पर अपनी बात मीडिया में रखते थे। वे द्विभाषी थे और दोनों भाषाओं में अपनी बात रख सकते थे। जब माननीय श्री वीरभद्र सिंह जी की पिछली सरकार यहां थी, उसमें इण्डिया टुडे, स्टेट ऑफ दि स्टेट्स अवार्ड

26/08/2019/1415/MS/HK/1

यानी बड़े राज्यों में हिमाचल को बेहतरीन एडजज्ड किया गया था और शिक्षा के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश को देश में अव्वल माना गया था। वह अवार्ड भी मुझे उनके हाथों से प्रदेश के लिए लेने का सौभाग्य मिला था।

उसके अलावा एक मुलाकात ऐसी भी है जो हमारे लिए यादगार है। जब हम लोग मुख्य संसदीय सचिव बने थे तो उसके बाद कुछ लोग इसके ख़िलाफ अदालत में चले गए थे और माननीय उच्च न्यायालय ने सारी नियुक्तियां रद्द कर दी थीं। हमने उसको माननीय उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी। जिस समय हमारे मामले की माननीय उच्चतम न्यायालय में बारी आई तो उस समय माननीय अरुण जेटली जी वहां प्रकट हो गए और उन्होंने सिर्फ़ इतनी बात कही कि ये तो संविधान में संशोधन के बाद बैकडोर नियुक्तियां हैं। इतने में ही सारा मामला खारिज़ हो गया और हम सबकी जो झण्डियां थीं वे भी खारिज़ हो गईं। मेरे कहने का यह तात्पर्य है कि उनकी माननीय उच्चतम न्यायालय में फेस वैल्यु थी। उनका ज्युडिशरी की नज़र में बहुत बड़ा स्थान था। उनके फेफड़ों में पानी भर गया था

जिसकी वजह से उन्हें सांस लेने में दिक्कत आ गई थी और ऐसे में वे हमारे बीच में से चले गए।

माननीय अध्यक्ष जी, वे कई मामलों की पैरवी करने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय में भी आए। वे बड़े-बड़े मसलों में, क्रिकेट की दुनिया से जुड़े रहे, ज्यूडिशरी की दुनिया से जुड़े रहे और फिर राजनीति की दुनिया में उन्होंने स्थान स्थापित किया। भारतीय जनता पार्टी का जो वर्ष 2017 का दृष्टिपत्र है, वह भी उन्हीं के हाथों से यहां पर पेश हुआ था। कई लोग जो उनके नज़दीकी रहे, वे हमारे भी अच्छे दोस्त हैं और वे बताते हैं कि उन्होंने अपने नौकरों के बच्चों की शिक्षा भी अपने बच्चों के बराबर ही करवाई यानी उनको विदेशों तक पढ़ने भेजा। यह अपने आप में एक मिसाल है कि घर में जो लोग काम कर रहे हैं, उन सबको भी वही स्थान देना जो अपने बच्चों को दिया। उन्होंने दूर-दराज़ तक उन लोगों के जीवन निर्माण में भी मदद की। ऐसे नेता आज हमारे बीच में नहीं है। माननीय अध्यक्ष जी, हम आज उनको सदन के माध्यम से याद कर रहे हैं और जो शोक प्रस्ताव यहां से उनके परिजनों को भेजा जाए, उसमें हमारे दल को भी शामिल किया जाए।

माननीय मुख्य मंत्री जी ने इस सदन की परम्पराओं से हटकर सदन एडजॉर्न करने की बात कही है जबकि सीटिंग मैम्बर के लिए ऐसा करते हैं या जो हमारे प्रदेश से राज्य सभा या लोकसभा के सदस्य हों, सिर्फ उसी स्थिति में यह सदन एडजॉर्न होता है। लेकिन मुख्य मंत्री जी ने प्रस्ताव किया है और संसदीय कार्य मंत्री जी का विशेष आग्रह आया है तथा माननीय अध्यक्ष जी ने भी यह बात कही है कि जिन भी राष्ट्रीय नेताओं के लिए केन्द्रीय स्तर पर शोक रखा जाएगा, उनके लिए हिमाचल विधान सभा में भी श्रद्धांजलि के लिए प्रस्ताव शामिल किया जाएगा। अतः इसमें मैं भी अपने दल को शामिल करता हूं और जो यह प्रस्ताव नियमों से हटकर लाया गया है, उसमें जो आपकी भावनाएं हैं उसको हम भी सहमति प्रदान करते हैं। माननीय अध्यक्ष जी, आपने बोलने के लिए समय दिया, आपका धन्यवाद।

अध्यक्षः अब माननीय सदस्य, श्री राकेश सिंघा जी अपने शोकोद्गार प्रकट करेंगे।

Sh. Rakesh Singha (Theog): Hon'ble Speaker, Sir, the condolence resolution moved by the Hon'ble Chief Minister for paying respect to Sh. Arun Jaitley Ji, I,

join on behalf of my Party, to pay my hearted condolences to all near and dears ones of Sh. Arun Jaitley Ji. He passed away on 24th August 2019. It is indeed a very sad day for all of us.

Continued by.....YK in English

26.08.2019/1420/जेके/वाईके/1

Shri Rakesh Singha____ Contd. …….

Shri Arun Jaitley ji will be remembered, as the Hon'ble Chief Minister has stated, for being a strategist in the Party and also for his articulate communication. He has been of that generation who became part of the movement during the Emergency. If I am not wrong, just prior to the Emergency, probably in 1974, he was elected President to the Delhi University Students' Union. He has been a brilliant student not only in single discipline but also in Economics, Commerce and Law. Unfortunately, I have not got the opportunity to communicate or speak to him. I have seen him from a distance. As regards his contribution in the United Nations; his contribution in the Supreme Court; and his contribution in the political field, he has left a very-very deep mark on whatever position he has held in different fields of life.

I, on my own behalf and on behalf of my Party, pay condolences to his dear wife, Mrs. Sangita Ji and children, namely, Mr. Rohan and Ms. Sonali and also to the BJP, who has lost a brilliant leader.

Thank you very much.

अध्यक्षः श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जी।

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु (नदौन): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव लाया है, उसमें मैं भी अपने आपको सम्मिलित करता हूं। मुझे एक वाक्या याद है, जब वर्ष 2014 में लोक सभा का चुनाव हुआ और अभी मंत्री परिषद् का गठन होना था, वे अक्सर इंडिया इंटरनेशनल सैंटर (आई0आई0सी0) में आया करते थे। वहां पर मैं, हमारे पूर्व मंत्री जी0एस0 बाली जी और रोहित ठाकुर जी लंच कर रहे थे, उतने में अरूण जेटली जी तीन-चार पत्रकारों के समूह के साथ आए और लंच पर बैठ गए। श्री जी0एस0 बाली जी को उन्होंने जोर से आवाज़ लगाई कि बाली जी आप इतने दूर क्यों बैठे हैं? आप हमारे पास आईए और हम तीनों लोग उठकर उनके पास गए। अभी मंत्री परिषद् के गठन की बात हो रही थी तो जी0एस0बाली जी और हम लोग उनके पास बैठे, उन्होंने कहा कि हमारा देश भावनाओं का है और जनता की भावनाओं का भारतीय जनता पार्टी ने इस बार आदर किया और हम सत्ता में आए। आपकी पार्टी दस साल सत्ता में रही लेकिन इन पांच सालों में वह जनता की भावना को नहीं समझ सकी, इसलिए बाली जी आप लोग विपक्ष में बैठ गए। जब माननीय मुख्य मंत्री जी ने प्रस्ताव लाया तो उनकी बात मुझे याद आई। उनकी शादी भी श्री गिरधारी लाल डोगरा जी, जो कांग्रेस के समय वित्त मंत्री थे, उनके परिवार में हुई थी। वे उच्च कोटि के वक्ता थे। ऐसी शख्सियत के लिए जो आप यहां पर प्रस्ताव लाए हैं, हमारा पूरा दल, जिसमें हमारे विधायक दल के नेता ने हम सब लोगों से बात करके कि परम्पराओं से हट कर आपने यह प्रस्ताव लाया,

26.08.2019/1425/SS-YK/1

हमारी पार्टी उसमें अपने आपको सम्मिलित करती है। परम्पराएं सदन बनाता है और हम सदन के सभी साथी उसमें अपने आपको सम्मिलित करते हैं, धन्यवाद, जयहिन्द।

अध्यक्ष: माननीय शिक्षा मंत्री, श्री सुरेश भारद्वाज जी, शोकोद्गार में भाग लेंगे।

शिक्षा एवं संसदीय कार्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, आज हम सदन में माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा देश के बहुत बड़े कद्दावर नेता, आदरणीय अरूण जेटली जी के निधन पर लाए गए शोकोद्गार में सम्मिलित होने के लिए एकत्रित हुए हैं। श्री अरूण जेटली जी, एक विख्यात

वकील ही नहीं थे, वरन् देश के एक ऐसे नेता थे जिनका दलगत राजनीति से ऊपर उठ करके सभी दलों में एक-समान सम्मान था और जो सभी के बीच में एक-समान मित्रता का भाव रखने वाले व्यक्ति थे। वे एक ऐसे नेता थे जो देश में आपातकाल लगने से पूर्व छात्र राजनीति में एक चमकते हुए सूर्य के रूप में आये थे। वे दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के 1974 में अध्यक्ष रहे। उसी समय देश में समग्र क्रांति आंदोलन चल रहा था। उसी कालखंड में पटना यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव हुआ करते थे और वर्तमान उप मुख्य मंत्री, सुशील कुमार मोदी वहां के जनरल सैक्रेटरी थे। उस समय सारे देश भर के छात्र नेताओं का सम्मेलन पटना यूनिवर्सिटी में हुआ था। जिसमें सारे देश में आंदोलन के लिए छात्र राजनीति की दृष्टि से जिस संघर्ष समिति का गठन किया गया था, उसके संयोजक के रूप में अरूण जेटली जी को चुना गया था। 1975 में देश में आपातकाल लग गया। वे 19 महीने जेल में बंद रहे। आपातकाल के बाद देश में चुनाव हुआ। जनता पार्टी का गठन हुआ। सारे देश के लोग, विशेष रूप से जो राजनेता थे, वे लालायित थे कि हम जनता पार्टी के सदस्य के रूप में कहीं-न-कहीं स्थान प्राप्त कर लें। ऐसे समय में, जो उस समय जनता पार्टी के अध्यक्ष, श्री चंद्रशेखर जी बने थे, उन्होंने अरूण जेटली जी को राष्ट्रीय कार्यकारिणी में रखा। लेकिन वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के सदस्य थे, इसलिए किसी राजनीतिक दल के पदाधिकारी या सदस्य नहीं बन सकते थे और विद्यार्थी परिषद् ने तय किया कि आप जनता पार्टी के सदस्य नहीं बनेंगे तथा विद्यार्थी परिषद् का ही काम करते रहेंगे। उन्होंने जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्यता छोड़ करके अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् में एक वर्ष पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में काम किया। उसके बाद उन्होंने वकालत प्रारम्भ की। उनके स्वर्गीय पिता, श्री बी0आर0 जेटली जी भी दिल्ली हाई कोर्ट के विख्यात वकील थे। जब उन्होंने वकालत प्रारम्भ की तो उसके ऊपर पूरी कॉन्सन्ट्रेशन की। देश के बहुत बड़े-बड़े केसिज़ को सुलझाने में हाईकोर्ट और उसके बाद सुप्रीम कोर्ट में पक्ष रखा। देश की आम जनता के हित में काम किया। इसी बीच में उनका विवाह भी हुआ। सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जी ने ठीक ही कहा कि श्री गिरधारी लाल भार्गव जी जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस के बहुत बड़े नेता थे जोकि वहां के उप-मुख्य मंत्री भी रहे। उनकी बेटी से उनका विवाह हुआ। फिर जब जनता दल की सरकार 1989 में हिन्दुस्तान में बनी, तब उन्हें सरकार ने एडिशनल सॉलिसिटर जनरल के रूप में जिम्मेवारी सौंपी। उस रूप में भी उन्होंने बहुत बड़े-बड़े केसिज़ लड़े। जैसे लालू प्रसाद

यादव जी का ही जो चारा घोटाले वाला केस है, उसी तरह से प्रिंट मीडिया से संबंधित बहुत सारे प्रमुख केसिज़ हैं जिसमें उन्होंने वकालत करते हुए ख्याति अर्जित की।

26.09.2019/1430/केएस/एजी/1

अभी उनकी विवाह की सालगिरह थी जिसमें देश के सभी बड़े-बड़े वकील और राजनेता जिनमें कपिल सिब्बल जी, अभिषेक मनु सिंघवी, पी.चिदंबरम आदि आए थे । लोग कहते थे कि यह बी.जे.पी. के लोगों का नहीं बल्कि वकीलों का एक समागम हो गया है। उनकी हरेक विषय पर क्लैरिटी होती थी। प्रवक्ता के रूप में भी जब वे काम करते थे या पार्टी के महासचिव के रूप में उन्होंने संगठन का काम प्रारम्भ किया तो कार्यकर्ताओं को समझाने और पार्टी के नेताओं को भी कि किस प्रकार से किस विषय पर हमको जनता के बीच में जाना चाहिए, बड़ी क्लैरिटी के साथ वे अपनी बात समझाते थे। उनका हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान रूप से कमांड था। भारतीय जनता पार्टी के तो जितने चुनाव अभियान हुए हैं, उनके सफलतम नायक के रूप में, प्रभारी के रूप में, अनेक प्रदेशों में उन्होंने कार्य किया है और हिमाचल प्रदेश सरकार का तो जो विज़न डॉक्यूमेंट, ऑफिशियल डॉक्यूमैंट है, उसको शिमला में आ कर माननीय अरुण जेटली जी ने ही जनता के बीच समर्पित किया था, उसको रिलीज़ किया था। हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट में वे अनेकों बार केसिज़ में अपीयर होते रहे हैं। जब 1990 से 1993 के बीच की सरकार बिना किसी कारण के, बावरी मस्जिद अयोध्या में ढहाई गई थी लेकिन हिमाचल प्रदेश में भी धारा 356 का इस्तेमाल करके सरकार गिर गई थी, तो उस समय उसको हाई कोर्ट में चैलेंज किया गया था। अरुण जेटली जी उस केस को लड़ने के लिए हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट में आए थे। ऐसे अनेकों किस्से हैं, उनकी बहुत सारी यादें हैं जो हिमाचल के साथ जुड़ी हैं। श्री संजय करोल जी ने जो हमारे पूर्व एडवोकेट जनरल रहे हैं, हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस भी रहे हैं, उन्हीं के चैम्बर में वकालत प्रारम्भ की थी। ऐसे अनेक लोग जो उनके चैम्बर में काम करते थे, वे कहीं न कहीं उच्च पदों पर वकालत की दृष्टि से अथवा जुडिशरी में स्थान पाए हुए हैं। जैसा मुकेश जी बता रहे थे कि उनके घर

का जो स्टाफ था, उसको वे ऐसे ट्रीट करते थे जैसे अपने परिवार के सदस्य हैं और उनको सभी प्रकार की सुविधाएं अपने बच्चों के समान दी जाती थी । सैंट्रल हॉल में भी मुझे राज्य सभा में उनके साथ काम करने का मौका मिला है, अगर हम किसी विषय पर बोलने के लिए उनसे पूछते थे तो वे पूरे विषय के बारे में बड़ी अच्छी तरह से समझाते थे कि इसको इस तरह से पेश करना है तथा किस प्रकार से बोलना है। सैंट्रल हॉल में उनके साथ अपने दल के कम लोग होते थे, अधिकांश दूसरे दलों के नेता होते थे, सभी के साथ उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। खासकर उनके पत्रकारों के साथ, मीडिया के साथ बहुत ही मधुर सम्बन्ध हुआ करते थे।

भारतीय जनता पार्टी ने पिछले एक-डेढ़ वर्ष में अपने बड़े-बड़े नेता खोये हैं जिससे न केवल पार्टी का नुकसान हुआ है बल्कि पूरे देश का भी नुकसान हुआ है। हमारे प्रमुख नेता श्री अनंत कुमार जी, जो कर्नाटक से सम्बन्धित थे, वे चले गए। गोवा के मुख्य मंत्री और देश के रक्षा मंत्री रहे मनोहर पार्रिकर जी, बहुत छोटी आयु में चले गए। हमारी पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज जी का भी कुछ दिन पूर्व आकस्मिक निधन हो गया और श्री अरुण जेटली जी का भी देहांत हो गया। ये एक ही समय के नेता थे जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी को ऊंचा उठाने और इस देश की राजनीति में एक नए युग का सूत्रपात किया था, ऐसे लोगों में अरुण जेटली जी भी शामिल थे। जी.एस.टी. के रूप में उनका विशेष योगदान था।

26.8.2019/1435/av/ag/1

उस समय के वित्त मंत्री और पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी तथा पूर्व प्रधान मंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह भी चाहते थे कि इस देश में जी0एस0टी0 लागू किया जाए। उन्होंने कई बार सारे देश के वित्त मंत्रियों की बैठक करके इस दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास किया। लेकिन श्री अरुण जेटली जी एक ऐसे वित्त मंत्री के रूप में निकले जिन्होंने सबकी कन्सेंसस लेकर जी0एस0टी0 को लागू करवाया। जब जी0एस0टी0 की कमेटी बनी तो उसके हैड बी0जे0पी0 के सुशील कुमार मोदी थे और तत्पश्चात् तृणमूल कांग्रेस के मित्रा जी भी

उसके अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे। जब से जी0एस0टी0 शुरू किया गया तब से एक भी निर्णय ऐसा नहीं आया जो बिना कन्सेंसस के हुआ हो। कन्फ्रंटेशन के बावजूद भी all decisions were taken by consensus; उनका यह एक बहुत बड़ा योगदान देश की वित्तीय व्यवस्था के लिए है।

उन्होंने बैंकरप्ट्सी का भी कानून बनाया। इस तरह से बहुत सारे कानून बनाने में उन्होंने अपनी विल पावर और स्किल्स का उपयोग किया जिसके लिए वे अनेक वर्षों तक जाने जायेंगे। आज यह सदन ऐसे मूर्धन्य नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत शोकोद्गार में मैं अपने आपको भी शामिल करता हूं। साथ में, ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे। धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब माननीय वन मंत्री जी शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

वन मंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री जी और विपक्ष के नेता माननीय मुकेश अग्निहोत्री जी जो शोकोद्गार प्रस्ताव इस सदन में लेकर आए हैं, उसमें मैं भी स्वयं को शामिल करता हूं।

श्री अरुण जेटली जी भारतीय जनता पार्टी के एक बहुत बड़े नेता होने के साथ-साथ भारत के पहली श्रेणी के प्रमुख नेताओं में से एक रहे हैं। उनका जन्म दिनांक 28 दिसम्बर, 1952 को दिल्ली में हुआ था और दिनांक 24 अगस्त, 2019 को दिल्ली के ऑल इण्डिया इन्स्टिच्यूट ऑफ मेडिकल साईंसिज़ में निधन हुआ। श्री अरुण जेटली जी एक सम्पन्न परिवार में पैदा हुए। उनके पिता एक बहुत अच्छे एडवोकेट के रूप में जाने जाते थे जिनका नाम महाराज किश्न रेड्डी तथा मां का नाम रत्न प्रभा था। एक सम्पन्न परिवार में पैदा होने से उनकी शिक्षा प्रारम्भ से ही अच्छे स्कूलों में हुई। उन्होंने सेंट ज़ेबियर स्कूल, नई दिल्ली में अपनी स्कूली शिक्षा ग्रहण की थी तथा वर्ष 1973 में श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से बी0कॉम0 करने के उपरांत उन्होंने वर्ष 1977 में दिल्ली युनिवर्सिटी से लॉ की डिग्री प्राप्त की। पिछले कल देश के जाने-माने पत्रकार श्री रजत शर्मा जी बता रहे थे कि मैं एक बहुत

गरीब परिवार में पैदा हुआ हूं और एक छोटे से कमरे में रहता था। मेरी एडमिशन श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में हुई। मैंने एक-एक, दो-दो रुपये इक्टठे करके कॉलेज की फीस इक्टठा की थी। लेकिन जब मैं फीस जमा करवाने के लिए लाइन में खड़ा था तो सामने फीस लेने वाले अकाउंटेंट ने मुझे डांटते हुए कहा कि इतने एक-एक, दो-दो रुपये इक्टठा करके लाए हो; इसको कौन गिनेगा। उन्होंने पैसे गिनने के बाद कहा कि इसमें तीन रुपये कम है, तीन रुपये और लेकर आओ तब तुम्हारी एडमिशन होगी। उसी वक्त पीछे से आवाज आई कि नये स्टूडेंट के साथ आप इस प्रकार से बात करते हो। उन्होंने तीन रुपये अपनी जेब से निकालकर दिए और मेरी फीस जमा करवाई; तब से लेकर के उनकी मित्रता का हाथ मेरे सिर पर रहा।

26.08.2019/1440/टी.सी.वी./डी.सी.-1

उसके बाद वे उनको चाय पीने के लिए भी ले गये, क्योंकि उनके पास चाय पीने के लिए भी पैसे नहीं थे। एक ऐसा उदाहरण जैसा अभी माननीय सदस्य श्री मुकेश अग्निहोत्री जी भी कह रहे थे कि अपने स्टॉफ के बच्चों को उस स्कूल मे पढ़ाते थे, जहां पर उनके अपने बच्चे पढ़ते थे। आजकल ऐसे बहुत कम लोग होते हैं। इसके पश्चात् उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् में काम करना प्रारम्भ किया और वर्ष 1974 में दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रेजीडेंट बने। वर्ष 1975 में आपातकाल के विरूद्व आन्दोलन में भागीदार बनें और जब उनके घर पर पुलिस फोर्स पहुंची तो उन्होंने अपने पिता जी से कहा कि मझे गिरफ़्तार तो होना ही है परन्तु मैं सत्याग्रह करके ही जेल जाना चाहूंगा। तब उन्होंने पुलिस को बातचीत में उलझाया और जेटली जी ने पिछले दरवाजे से जाकर दिल्ली यूनिवर्सिटी में अपने 40-50 साथियों को इकट्ठा करके जलूस निकाला और सत्याग्रह करके जेल चले गये। उनको छोटी-सी उम्र में 19 महीने की कारवास की सज़ा हुई।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक अच्छे नेता व प्रखर व़क्ता के अलावा उन्होंने देश और दुनिया में एक एडवोकेट के नाते भी अच्छी पहचान बनाई। हालांकि, वे राजनीतिक क्षेत्र में

थे लेकिन एक अच्छे एडवोकेट के नाते पहचान बनाना, उनका पहला शौक था। उनको अपने जीवन में खान-पान का भी बहुत शौक था और वे आइस्क्रीम के बड़े शौकीन रहे। उनको फिल्मी गाने सुनने का भी शौक था। वे एक सादगी पूर्ण और खुले माहौल में जीना पसन्द करते थे। जब वर्ष 1989-90 में भारतीय जनता पार्टी के समर्थन से पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह की सरकार बनी तो उस समय वे अतिरिक्त सोलीसीटर जनरल के पद पर रहे। उस समय अनेक महत्वपूर्ण कार्य करके, वे अपनी एक अलग पहचान छोड़ गये। वर्ष 1991 में वे भारतीय जनता पार्टी की नेशनल एग्जीक्यूटिव के मैंबर बने और वर्ष 1999 में उनको भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता नियुक्त किया गया। इसके कारण उनकी पूरे देश में पहचान बनी।

वे स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में बिल्कुल नये थे। वर्ष 1999 से 2004 तक उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण जैसे- विधि, न्याय एवं उपभोक्ता तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने अपने पहले टेन्योर में ही बहुत महत्वपूर्ण निर्णय देश हित में लिये। वे वर्ष 2004 में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव चुने गये। उन्होंने जीवन में कभी भी सीधे तौर पर चुनाव नहीं लड़ा। वे अधिकतर राज्यसभा से ही चुनकर आते रहे। वर्ष 2014 में भारतीय जनता पार्टी ने अमृतसर से उनको लोकसभा का टिकट दिया था जिसमें वे पंजाब के मुख्य मंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह जी से चुनाव हार गये थे लेकिन उसके बाद फिर आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी की सरकार में वित्त मंत्रालय जैसे बहुत महत्वपूर्ण पद पर आये। उन्होंने देश हित में जी.एस.टी. ब्लैकमनी और नोटबंदी जैसे बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिए। ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए उनमें एक दृढ़ निश्चय था।

अध्यक्ष महोदय, आख़िर में, मैं एक बात कहना चाहूंगा कि

26-08-2019/1445/NS/DC/1

जब सरकार बनी तो हमें विश्व बैंक से पत्र आया और उसमें कहा गया था कि हिमाचल प्रदेश में कुछ योजनाओं पर विश्व बैंक की धनराशि ठीक से खर्च नहीं हुई है। इसलिए फोरेस्ट का इंटीग्रेटेड डिवैल्पमेंट प्रोजेक्ट जो लगभग 700 करोड़ रुपये का था, हम उस

प्रोजेक्ट को ड्रोप कर रहे हैं। यह प्रोजेक्ट हम आपको नहीं देंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने यह चर्चा माननीय मुख्य मंत्री जी से की और जब मैं, माननीय मुख्य मंत्री जी का पत्र ले करके दिल्ली गया यानी दिनांक 9 सितम्बर और 14 सितम्बर को दोनों बार उन्होंने मुझे मिलने के लिए बुलाया। उन्होंने अपने अधिकारियों को बुला करके मेरे सामने कहा कि हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री का पत्र ले करके वहां के वन मंत्री आए हैं, उन्होंने आधे घंटे की मीटिंग की और निर्देश दिए कि विश्व बैंक से बात करके इसकी स्वीकृति करवाओ। माननीय अध्यक्ष महोदय, वहां पर मैंने उनका बड़पन्न देखा। मेरा उनसे कोई बहुत ज्यादा परिचय नहीं था, मैं उनसे पहली बार मिला था। मैंने उनको तीन बार फोन किया तो वे कहीं व्यस्त थे। लेकिन उन्होंने मुझे तीनों बार कॉल बैक किया। मैंने माननीय मुख्य मंत्री जी को कहा कि अगर आपकी उनसे दोबारा फोन पर बात हो जाए तो अच्छा है। इन्होंने मुझे कहा कि आप मेरी गाड़ी में बैठो और जब हमने कॉल किया तो कहा कि वे साढ़े छः बजे हॉस्पिटल से वापिस आएंगे। ठीक साढ़े छः बजे मुझे फोन आया कि मुख्य मंत्री जी से बात करनी है। मैंने माननीय मुख्य मंत्री जी की बात करवाई तो दूसरे-तीसरे दिन ही उन्होंने पत्र दे करके आई0डी0पी0 और वर्ल्ड बैंक को तैयार करवाया। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने उनका इतना बड़पन्न देखा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस माननीय सदन में सभी की ओर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को ईश्वर शांति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे। आपने मुझे इस शोकोद्गार में बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्षः स्वर्गीय श्री अरुण जेटली जी जोकि केंद्र सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्री, रक्षा मंत्री और वित्त मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर शोभायमान रहे। देश के महान नेता के आकस्मिक निधन पर सदन के नेता श्री जय राम ठाकुर जी ने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, नेता प्रतिपक्ष और अन्य माननीय सदस्यों ने अपने-अपने उद्गार व्यक्त किए हैं, मैं भी उसमें अपने आपको शामिल करता हूं। देश ने एक महान शख्सियत को खोया है। ऐसे समय पर जो संवेदनाएं सदन ने उनके प्रति व्यक्त की हैं, उनके परिवारजनों को पहुंचा दी जाएंगी। मैं भी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। भारत में सदैव इस प्रकार की महान शख्सियत पैदा होती रहें और भारत उनके विचारों के साथ एक साथ हो करके आगे बढ़ता रहे। मैं,

माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि वे कुछ पल के लिए अपने स्थान पर खड़े हो करके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए मौन रखें।

(दिवंगत आत्मा की शांति के लिए कुछ क्षण मौन रखा गया।)

माननीय मुख्य मंत्री जी की ओर से सदन की कार्यवाही को स्थगित करने का सुझाव आया है और नेता प्रतिपक्ष व अन्य माननीय सदस्यों ने इसे सहमति प्रदान की है।

26.08.2019/1450/RKS/HK-1

ऐसी सूरत में मैं एक व्यवस्था देना चाहूंगा कि देश के किसी महान व्यक्ति का देहावसान होने पर यदि राजकीय व राष्ट्रीय शोक घोषित किया गया हो और सत्र चल रहा हो तो ऐसी स्थिति में सदन की सहमति के साथ शोकोद्गार प्रस्तुत किए जा सकते हैं व सहमति के साथ कार्यवाही को स्थगित किया जा सकता है। माननीय शिक्षा एवं संसदीय मंत्री जी, क्या आप कुछ कहना चाहते हैं?

शिक्षा एवं संसदीय कार्य मंत्रीः माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा माननीय सदन के नेता और माननीय विपक्ष के नेता ने सहमति जताई है कि आदरणीय अरुण जेटली जी के देहावसान पर, उनके सम्मान में हाउस को स्थगित करें तो इसके लिए आपने व्यवस्था दे दी है और मैं समझता हूं कि इस संबंध में प्रस्ताव करने की आवश्यकता नहीं है।

अध्यक्षः इस संबंध में पहले ही व्यवस्था दे दी गई है। इसके अतिरिक्त जो आज की कार्यसूची में सम्मिलित प्रश्न हैं और उनके उत्तर माननीय मंत्री महोदय द्वारा सदन के पटल पर रखे गए हैं, उन्हें सदन की कार्यवाही का हिस्सा माना जाएगा। आज की जो शेष कार्यवाही है उसे कल के लिए मुल्तवी किया जाता है। प्रश्नों को छोड़कर शेष कार्यवाही अगले दिन यानी 27 अगस्त, 2019 की कार्यसूची में शामिल की जाएगी।

अब इस माननीय सदन की बैठक दिवंगत आत्मा के सम्मान में मंगलवार, 27 अगस्त, 2019 के 11:00 बजे पूर्वाह्न तक स्थगित की जाती है।

शिमला-171004 **यशपाल शर्मा,**
दिनांकः 26 अगस्त, 2019 **सचिव।**